Vol-08 Issue 02, February- 2024 Impact Factor: 7.936
ISSN: 2456-9348

iJETRM
International Journal of Engineering Technology Research & Management
www.ijetrm.com

जल संकट एवं शहरी गरीब महिलाएंः लखनऊ शहर की दो मलिन बस्तियों की एक केस स्टडी

नेहा कनौजिया
शोधछात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

सारांश
उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी लखनऊ शहर है, जहां 2011 की जनगणना के अनुसार 2,908,455 आबादी निवास करती है। लखनऊ नगर निगम एवं जिला शहरी विकास प्राधिकरण के अनुसार शहर में कुल 609 मलिन बस्तियों में कुल 1,48,117 घरों में कुल 7,72,807 लोग रहते हैं। जल की अपर्याप्तता और सुरक्षित जल तक पहुंच में कमी इन मलिन बस्तियों के लोगों के जीवन का हिस्सा रही है। जल एक अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है और महिलाएं प्रकृति की संरक्षक होती हैं। महिलाएं जल जैसे प्राकृतिक संसाधन का प्रयोग कर अपने परिवार का पालन पोषण करती हैं, अतः महिलाओं के लिए जल का संकट व्यक्तिगत है। प्रस्तुत शोधपत्र में लखनऊ शहर की दो मलिन बस्तियों निवास करने वाली महिलाओं से बातचीत के आधार पर जल संकट की तीव्रता और महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर जल संकट के कारण पढ़ने वाले प्रभाव जैसे मुद्दों को पहचानने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त मलिन बस्तियों में जल संकट की समस्या क्यों है, इसके लिए जिम्मेदार कारकों को भी पहचानने की कोशिश की गई है।

मुख्य शब्दः जलसंकट, महिलाएं, मलिन बस्तियां, संवैधानिक प्रावधान, समाजशास्त्र, सामाजिक–आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना

सुरक्षित जल का मतलब है, वह जल जो आवास उपलब्ध हो, जरूरत पड़ने पर सुलभ हो और प्रदूषण से मुक्त हो। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2010 में जल और स्वच्छता के मानव अधिकार को स्पष्ट रूप से मान्यता दी और इस बात को भी स्वीकार किया कि पेय जल और स्वच्छता सभी मानव अधिकारों की प्राप्ति के लिए जरूरी है। तीव्र जल संकट विकासशील देशों के लिए प्रमुख समस्याओं में से एक है। ग्रामीण क्षेत्र से शहरों की ओर प्रवास की दर अधिक है, जिस कारण शहरों में अधिक से अधिक मलिन बस्तियों का विकास हो रहा है। इन मलिन बस्तियों में आधार भूत सुविधाओं का अभाव है। जल की अनुपलब्धता इन मलिन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों की बड़ी समस्याओं में से एक है। क्योंकि महिलाएं जल जैसे प्राकृतिक संसाधन का प्रयोग कर अपने परिवार का पालन पोषण करती हैं, जल जैसे अमूल्य प्राकृतिक संसाधन की अनुपलब्धता की स्थिति में इन महिलाओं को अत्यधिक

iJETRM
International Journal of Engineering Technology Research & Management
www.ijetrm.com

कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। घर के लिए जल का प्रबंध इन्हीं की जिम्मेदारी है और जल उपलब्ध न होने पर महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

निश्चित रूप से जल की कमी विश्व स्तर पर एक गंभीर मुद्दा है जो लिंग गति शीलता के साथ ही समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रहा है निम्नलिखित कुछ समाज शास्त्रीय अध्ययन है जो अंतरराष्ट्रीय और भारत दोनों स्तर पर जल संकट और महिलाओं की भूमिकाओं के अंतर संबंध पर प्रकाश डालते हैं:

ग्लोबल वॉटर क्राइसिस एंड फ्यूचर फूड सिक्योरिटी इन एन एरा ऑफ क्लाइमेट चेंज(हंजरा एवं कुरैशी, 2010): यह अध्ययन भविष्य में वैश्विक मानव आबादी के बढ़ने जिसके कारण भविष्य में जल संकट बढ़ने पर प्रकाश डालता है । जल को ने वाला पहले क्षेत्र सिंचाई होगा क्योंकि गैर कृषि उपयोगी से जल की प्रतिस्पर्धा बढ जाएगी और जल की कमी तेज हो जाएगी। जल की बढ़ती कमी का खाद्य सुरक्षा, भुखमरी, गरीबी, परिस्थितकी तंत्र, स्वास्थ्य और सेवाओं पर प्रभाव पड़ेगा।

लिंग और जल रू महिलाओं के अधिकार और जिम्मेदारियां (कुल कर्णी एवं जॉय, 2006): यह अध्ययन भारत में जल की कमी के लिंग आधारित प्रभावों की जांच करता है जिस में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि कैसे कई समुदायों में जल संग्रहण और प्रबंधन की प्राथमिक जिम्मेदारी के कारण महिलाएं आसमान रूप से प्रभावित होती हैं।

जेंडर एंड वॉटर रू एड ओवर व्यू (सीमा अरोड़ा, 2011): यह व्यापक समीक्षा विश्व स्तर पर जल की कमी के लिंग आधारित आयामों की जांच करती है, जिसमें चर्चा की गई है कि कैसे सामाजिक मानदंड और शक्ति संरचनाए जल संसाधनों तक महिलाओं की पहुंचे और प्रबंधन को प्रभावित करती हैं।

वॉटर स्कार्सिटी, जेंडर एंड क्लाइमेट चेंज एडॉप्शन इन साउथ एशियाः फ्रॉम अंडर स्टैंडिंग टू एक्शन (एरियल, भदवाल एवं जोशी, 2019): यह अध्ययन जल की कमी, लिंग की गतिशीलता और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन रणनीतियों के बीच संबंध का पता लगता है। भारत सहित दक्षिण एशिया में नीति और व्यवहार के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करता है ।

वूमेन, वाटर एंड पॉवर्टी इन द मिडल ईस्ट एंड नॉर्थ अफ्रीका (जेबामणि, ब्रुगेमैन और विरजी, 2005): यह अध्ययन मध्य पूर्व और उत्तर में जल की कमी, गरीबी और लिंग गतिशीलता के बीच जटिल संबंधों की पड़ताल करता है । अफ्रीका क्षेत्र इस बात पर प्रकाश डालता है किम हिलाएं अपनी जल से संबंधित चुनौतियां का खामियाजा कैसे भुगतती हैं।

यह अध्ययन जल की कमी और महिलाओं के अनुभवों के बीच जटिल अंतर संबंध में मूल्यवान अंत र्दृष्टि प्रदान करते हैं जो जल संसाधन प्रबंधन और नीतिगत हस्तक्षेपों के लिए लिंग–संवेदनशील दृष्टि कोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1.लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों की जल संकट की स्थिति को जानना।

2.मलिन बस्तियों में निवास करने वाली महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर जलसंकट के प्रभाव को जानना।

iJETRM
International Journal of Engineering Technology Research & Management
www.ijetrm.com

अध्ययन का समग्र एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन का स्तर सूक्ष्म प्रकृतिका है। प्रस्तुत अध्ययन में संभावित निदर्शन में देव निदर्शन पद्धति से दो मलिन बस्तियों का चयन किया गया है। दोनों पंजीकृत मलिन बस्तियां हैं। अध्ययन का समग्र चयनित मलिन बस्तियों में रहने वाली समस्त महिलाएं हैं। प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी लखनऊ की दो मलिन बस्तियों छुईयापुरवा और मवैया मलिन बस्तियों में आयोजित किया गया, जहां प्रत्येक महिला निवासी संभावित अध्ययन इकाई थी।

परिणाम एव ंविवेचना

केस स्टडी–1(छुईयापुरवा मलिनबस्ती)

सर्व प्रथम लखनऊ नगर में स्थित छुईयापुरवा मलिन बस्ती का दौरा किया गया । यह बस्ती रेल लाइन के एक किनारे पर स्थित है जहां बांस, पल्ली, टाट की बोरी, लकड़ी के पटरे से बने एक सीधी रेखा में छोटे–छोटे घर देखे गए । उसके पश्चात देखा गया कि कुछ महिलाएं प्लास्टिक के डिब्बो में जल भर कर ला रही थी । उनके पीछे ठेलिया में कुछ बच्चे छोटे–छोटे प्लास्टिक के जल पात्रों में जल लाते दिखे । बातचीत के लिए सर्व प्रथम एक 22 वर्षीय महिला जिन्होंने एक हाथ में बच्चों को पकड़ रखा था और दूसरे हाथ में एक प्लास्टिक का डिब्बा लेकर जाते दिखाई दी, उनसे बातचीत करने पर पता चला कि उनकी बस्ती में जल की कोई व्यवस्था नहीं है। जललाने के लिए उन्हें 1 किलोमीटर पैदल चलकर जल स्रोत तक जाना पड़ता है। जल स्रोत के पास पहुंचने पर देखा गया कि वहां खुले में रोड के किनारे एक टंकी थी । जहां कुछ लड़कियां कपड़े धुल रही थी और बच्चे स्नान कर रहे थे जब कि पास ही में कुछ महिलाएं अपने जलपात्रों को लेकर नल खाली होने की प्रतीक्षा कर रही थी व आपस में गपशप कर रही थी। वहां एकत्रित महिलाओं से उनके मूल निवास, दैनिक दिनचर्या, बस्ती की समस्याओं सरकारी, गैर–सरकारी संगठन द्वारा उनकी समस्या को सुलझाने के प्रति अपनाई गई पहलों पर उनका रुख जानने के लिए बातचीत करने पर वहां खड़ी 45 वर्षीय महिला ने बताया कि वह सुल्तानपुर की रहने वाली हैं और शादी के बाद अपने पति के साथ रोजी–रोटी हेतु यहां आई और पिछले 20 वर्षों से यहां निवास कर रही हैं। मलिन बस्ती की समस्याओं के बारे में बताते हुए सर्वप्रथम उन्होंने जल और शौचालय की समस्या का जिक्र किया। जल स्रोत की दूरी उनकी समय और ऊर्जा की बर्बादी है और शौचालय नहोना उन्हें खुले में शौच हेतु मजबूर करता है। यहां पूरी मलिन बस्ती हेत ुकेवल एक ही टंकी है जिस पर 100 परिवार निर्भर हैं। पास में खड़ी 33 वर्ष की अन्य महिला ने बताया कि हम शौच हेतु रेल पटरी के किनारे के स्थान का प्रयोग करते हैं। जल की समस्या पर और विस्तृत जानकारी मांगने पर वहां पर कपड़े धोती 16 वर्ष और 18 वर्ष की बच्चियों ने बताया कि यहां जल दो समय आता है 5 से 6 बजे सुबह और 5 से 6 बजे शाम, शेष दिन में टंकी के जल का उपभोग करते हैं किंतु ज्यादा लोग इसी टंकी पर निर्भर रहते हैं अतः सभी की घरेलू आवश्यकता नहीं पूरी हो पाती हैं, जो पहले पहुंच जाता है टंकी के जल का इस्तेमाल करता है.....। बस्ती निवासी सरकार से संतुष्ट है और अपनी खराब स्थिति का जिम्मेदार सरकार को ही मानते हैं। प्रत्येक दिन लाइन में लग कर जल प्राप्ति हेतु संघर्ष करना उनके जीवन का

iJETRM
International Journal of Engineering Technology Research & Management
www.ijetrm.com

हिस्सा बन गया है। इन महिलाओं के लिए जल एकत्र करना पूरे दिन के अधिकतर समय को इस एक गतिविधि पर खर्च करना है जिस का इस्तेमाल यह महिलाएं अन्य उत्पादक गतिविधियों में कर सकती हैं । जलन मिलने पर वह कैसे अपनी जरूरतें पूरी करेंगे इस सोच में वह हर संभव प्रयास करती हैं कि उन्हें जल जरूर मिले। अन्य को लगता है कि भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है कि उन तक यह आधारभूत सुविधाएं नहीं पहुंच पा रही हैं।

केस स्टडी–2(मवैया मलिन बस्ती)

रेल पटरी के किनारे विस्तृत मैदान में स्थित यह एक बड़ी मलिन बस्ती है। इस बस्ती में चारों ओर से प्रवेश कर सकते हैं। किनारे व ऊंचाई पर स्थित झोपड़ पट्टी एक तरफ रेल पटरी से लगी है और अन्य तरफ सड़कों से लगी हैं। जब कि ऊपर से नीचे अंदर की ओर उतरते हुए यह बस्ती काफी ढलान युक्त है जहां कई छोटे–छोटे आवास बिना किसी क्रम के बसे है। एक 50 वर्षीय महिला अपनी झोपड़ी के बाहर एकल कड़ी के तख्ते पर बैठी थी और उनके साथ दो और महिलाएं बैठी थी और पास में दो लड़कियां खड़ी थी। मलिन बस्ती से संबंधित समस्याओं के विषय में पूछने पर नजदीक बैठी 35 वर्षीय महिला ने कहा कि यहां आप की ही भांति बहुत से लोग आते हैं सवाल करते हैं। उन्होंने बताया कि पहले उनकी मलिन बस्ती में जल की कोई व्यवस्था नहीं थी किंतु दो वर्ष पहले सरकार द्वारा बस्ती की जल जरूरत को पूरा करने हेतु दो टंकियां की व्यवस्था की गई जहां सुबह, दोपहर और शाम दो–दो घंटे जल आता है। किंतु 1600 की आबादी की आवश्यकता पूर्ति हेतु यह पर्याप्त नहीं है। जल हेतु यहां आए दिन लड़ाई–झगड़ा होता है। 20 वर्षीय महिला ने बताया कि जल के लिए वे सुबह जल्दी उठती है और लंबी लाइनों में लगती है किंतु अक्सर जल लेने में लड़ाइयां शुरू हो जाती है और कइ बार उन्हें जल नहीं मिल पाता है। 35 वर्षीय अन्य महिला ने बताया कि सुबह और शाम को जल मिलना मुश्किल हो जाता है जब कि दोपहर में जल लेने हेतु इतना संघर्ष नहीं करना पड़ता है । सुबह का समय काफी चुनौत पूर्ण होता है क्योंकि जल लेकर घर के सभी कार्यों को निपटा कर काम पर जाना होता है और सुबह यदि जल समय से नहीं मिल पाता है तो बाकी सभी कार्यों में विलंब होता है। जल के कारण कार्य करने वाली महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक दिक्कतें होती हैं। 25 वर्षीय महिला ने बताया कि कई बार जल के कारण घरेलू कार्यों में देरी के चलते कार्य पर जाने में देरी होती है और मालिक के गुस्से का शिकार होना पड़ता है, कई बार वह पगार तक गुस्से में काटने की धमकी देता है। जल संबंधी समस्या उनकी रोजी–रोटी पर मुसीबत खड़ी कर देती है।

निष्कर्ष

जल की कमी और मलिन बस्तियों में महिलाओं के अंतर संबंध से निकल गया निष्कर्ष इन शहरी सेटिंग में स्वच्छ जल तक पहुंचने में महिलाओं द्वारा सामना किया जाने वाले असंगत बोझ को उजागर करता है या मुद्दा इस आवश्यक संसाधन तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए जल प्रावधान और प्रबंधन में लैंगिक असमानताओं को संबोधित करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इसके अलावा शिक्षा,

iJETRM
International Journal of Engineering Technology Research & Management
www.ijetrm.com

संसाधनों और निर्णय लेने की शक्ति के साथ महिलाओं को सशक्त बनाना जल की कमी को दूर करने और मलिन बस्तियों में रहने की स्थिति में सुधार के लिए अधिक टिकाऊ समाधानों में योगदान दे सकता है।

संदर्भ ग्रंथसूची

हंजरा,मुन्नार ए0कुरैशी, एम0 एजाज. (2010).ग्लोबल वॉटर क्राइसिस एंड फ्यूचर फूड सिक्योरिटी इन एन एरा ऑफ क्लाइमेट चेंज. फूड पॉलिसी.पेज 265–377.

गार्सिया, एस0 एल0. (2019). एंडक्लाइमेट चेंज.

बोस, पी0श्रीवास्तव, पुनीत. (2017).वाटर सप्लाई फॉर अर्बनपुअर.

काश,मोहम्मद.(2014). लाइवली हुड एंड हेल्थ स्टेटस ऑफ स्लम द्वेल र्सइन अलीगढ़ सिटी. शोधगंगा.

यादव,स्नेह. (2020). प्रॉब्लम्स एंड चौलेंजिस अमांग्स स्लम्स वूमेन फॉर द सस्टेनेबल लाइवली हुड इन लखनऊ सिटी. स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी, साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज. पेज 10334–10341.

कुलकर्णी,सीमा एवं जॉय. (2006). लिंग और जल महिलाओं के अधिकार और जिम्मेदारियां.

अरोड़ा, सीमा.(2011). जेंडर एंड वॉटर एड ओवर व्यू.

एरियल, भदवाल एवं जोश. (2019).वॉटर स्कार्सिटी, जेंडर एंड क्लाइमेट चेंज एडॉप्शन इन साउथ एशिया फ्रॉम अंडर स्टैंडिंग टू एक्शन.

जेबामणि, ब्रुगेमैन और विरजी.(2005). वूमेन,वाटर एंड पॉवर्टी इन द मिडल ईस्ट एंड नॉर्थ अफ्रीका.

सुब्रमण्यम,आर0 (2013).सोशल इकोलॉजी ऑफ वाटर इन ए स्लम मुंबई.